शकुन्तला (चरित्र-चित्रण contd)

(9) स्वाभिमानिनी प्रेमिका – शकुन्तला स्वाभिमानिनी प्रेमिका है। तृतीय अंक में जब प्रियंवदा और अनुसूया उसकी कामपीड़ा की अभिवृद्धि लक्ष्य करके मनोरथ सम्पादन हेतु दुष्यन्त को पत्र लिखने की प्रेरणा देती है, उस समय वह इस शंका से पत्र नहीं लिखना चाहती कि कहीं दुष्यन्त उसके प्रेम का तिरस्कार न कर दे।

(10) सती-साध्वी नारी – शकुन्तला विवाह के पश्चात सदैव पति के चिन्तन में मग्न रहती है। उसे दुर्वासा ऋषि के आगमन का भी ज्ञान नहीं है। राजा के द्वारा परित्यक्त होने पर भी वह स्वयं को दोष देती है, राजा को अपराधी नहीं ठहराती – 'नूनं मे सुखप्रति बन्धकम्'। वह विरहिणी के वेश में पति के चिन्तन में लीन है, उसे अपने मण्डन का ध्यान नहीं। वह तपस्विनी की भाँति अपने चरित्र-रक्षा में संलग्न है –

'वसने परिधूसरे वसाना नियमक्षाममुखी धृतैकवेणिः।
अतिनिष्करुणस्य शुद्धशीला मम दीर्घं विरहव्रतं बिभर्ति।' (भाति)

(अभि० शा० -7/21)

डा० कीथ ने कालिदास द्वारा शकुन्तला के प्रेम-व्यवहार के विकास की स्वाभाविकता का निरूपण करते हुए लिखा है – "शकुन्तला का उदीयमान अनुराग पूर्ण कौशल से चित्रित हुआ है। उसके विवाह और उसके परिणाम का निर्देश मानसिक स्पर्श के साथ किया गया है। उसमें राजा के न्यायविरुद्ध आचरण का स्पष्टीकरण मिलता है, उसका कारण शाप है। उस शाप

के उत्तरदायित्व से शकुन्तला भी मुक्त नहीं है, क्योंकि वह अपने प्रेम के कारण अभ्यागत तथा ऋषि के अतिथि-सत्कार और सम्मान को भूल जाती है। राजा के समक्ष वह कोई धमकी नहीं देती और मर्यादित व्यवहार करती है। राजा के द्वारा प्रेम-संबंध के प्रत्याख्यान से वह स्तम्भित हो गयी है।"

नायिका के रूप में - शकुन्तला के चरित्र में वे दसों गुण वर्तमान हैं, जो एक नायिका में होना चाहिए -

"भावो हावश्च हेला च त्रयस्तत्र शरीरजाः।
शोभा कान्तिश्च दीप्तिश्च माधुर्यश्च ~~प्रमल्भ~~ प्रगल्भता॥
औदार्यं धैर्यमित्येते सप्त भावा अयत्नजाः॥

शकुन्तला के भाव रूप का वर्णन राजा दुष्यन्त से इस प्रकार कहते हैं -

"दर्भाङ्कुरेण चरणः क्षत इत्यकाण्डे तन्वी स्थिता कतिचिदेव पदानि गत्वा। आसीद्विवृत्तवदना च विमोचयन्ती शाखासु वल्कलमसक्तमपि द्रुमाणाम्॥"

शकुन्तला के प्रेम की हेला स्थिति का स्पष्ट संकेत तृतीय अंक के उत्तरार्ध में इस प्रकार किया गया है - (अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैरनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्। अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः॥

श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा - "शकुन्तला की सरलता अपराध में, दुःख में, अभिज्ञता में, धैर्य और क्षमा में परिपक्व है, गम्भीर और स्थायी है।

Uma Pathak
Deptt of SKT.
B.A II yr (Content)